PCS Mantra · pcsmantra.in

SAMPADA: एनीमिया के आँकड़ों में आयु और जाँच-पद्धति क्यों महत्वपूर्ण हैं

25 नवंबर 2026 · PCSMANTRA टीम



मौलिक सांकेतिक चित्र

खबरों में क्यों

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) ने 23 नवंबर को SAMPADA 2023–2025 के प्रमुख निष्कर्ष जारी किए। इसका पूरा नाम Survey for Assessment of Markers of Population Health, Activity, Diet and Anthropometry है। पत्र सूचना कार्यालय (PIB) की विज्ञप्ति और ICMR के राष्ट्रीय पोषण संस्थान (ICMR-NIN) की मूल फैक्टशीट एनीमिया तथा सूक्ष्म-पोषक तत्वों की कमी पर जीवन के विभिन्न चरणों के अनुमान देती हैं। [1][2]

सर्वेक्षण कैसे हुआ

दायरे में दो लाख से अधिक व्यक्ति, 81,000 से अधिक परिवार, 183 जिले और 35 राज्य व केंद्रशासित प्रदेश शामिल थे। हीमोग्लोबिन के लिए 1.7 लाख से अधिक रक्त नमूने जाँचे गए। सर्वेक्षण में शिरा से रक्त लेकर स्वचालित विश्लेषकों का उपयोग किया गया। एक उप-नमूने में आयरन, फोलेट, विटामिन B12 और सूजन से जुड़े जैव-संकेतकों का भी आकलन हुआ। [1]

प्रतिशत किस समूह का है

PIB के अनुसार 12–59 माह के बच्चों में एनीमिया लगभग 42%, 10–19 वर्ष की किशोरियों में 46% और प्रजनन आयु की महिलाओं में 56% पाया गया। किशोर लड़कों और 20–59 वर्ष के पुरुषों में अनुमान लगभग 22–23% था। बच्चों का 42% आँकड़ा सभी उम्र के बच्चों या सभी पाँच वर्ष से छोटे बच्चों का आँकड़ा नहीं है; यह आँकड़ा केवल 12–59 माह आयु-समूह का है। [1][2]

अधिकांश आयु-समूहों में गंभीर एनीमिया 2% से कम था। लगभग आधी एनीमिक महिलाओं, किशोरियों और बच्चों के मामले हल्के थे। कम गंभीरता का अर्थ जाँच और उपचार की जरूरत खत्म होना नहीं है। [1]

केवल आयरन से पूरी व्याख्या नहीं

आधिकारिक विज्ञप्ति महिलाओं, किशोरियों और बच्चों में एनीमिया के लगभग आधे मामलों को आयरन की कमी से जोड़ती है। उसमें संक्रमण, हीमोग्लोबिनोपैथी और दीर्घकालिक रोगों से जुड़ी सूजन जैसे अन्य कारणों पर भी ध्यान देने को कहा गया है। B12 और फोलेट की कमी एनीमिक तथा गैर-एनीमिक दोनों समूहों में समान रूप से मिलने के आधार पर विज्ञप्ति उनका एनीमिया में सीमित योगदान बताती है। इसे उन विटामिनों की कमी को सामान्यतः महत्वहीन मानने का निष्कर्ष नहीं बनाना चाहिए। [1]

तुलना में सावधानी

पिछले राष्ट्रीय सर्वेक्षणों से कम अनुमान मिलना आधिकारिक निष्कर्ष है। तुलना करते समय जाँच-पद्धति, आयु-दायरे और परिभाषाओं का मिलान जरूरी है; केवल प्रतिशतों का अंतर रोग में निश्चित गिरावट नहीं बताता। फैक्टशीट में राज्यवार आँकड़े और बुजुर्गों के राष्ट्रीय अनुमान भी दिए गए हैं। [1][2]

प्रिलिम्स अभ्यास

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: SAMPADA में शिरा-रक्त और स्वचालित विश्लेषकों से हीमोग्लोबिन का आकलन हुआ।

कथन 2: 42% का प्रकाशित बाल-एनीमिया अनुमान 12–59 माह आयु-समूह का है।

कथन 3: आयरन की कमी सभी एनीमिया की एकमात्र वजह पाई गई।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

▼ उत्तर और व्याख्या

सही उत्तर: (a)

कथन 1 सही है: सर्वेक्षण में शिरा-रक्त के नमूनों और स्वचालित विश्लेषकों से हीमोग्लोबिन मापा गया।

कथन 2 सही है: 42% का अनुमान 12–59 माह के बच्चों का है, सभी बच्चों का नहीं।

कथन 3 गलत है: एनीमिया के पोषणीय और गैर-पोषणीय अनेक कारण हैं; आयरन की कमी एकमात्र कारण नहीं है।

मुख्य परीक्षा अभ्यास

एनीमिया नीति में आयु-विशिष्ट आँकड़ों और मानकीकृत जाँच-पद्धति का महत्व बताइए। (150 शब्द, 10 अंक)

उत्तर की रूपरेखा:

- **भूमिका में:** एनीमिया को बहु-कारणी स्वास्थ्य समस्या बताएँ।
- **मुख्य भाग में:** आयु-दायरा, जाँच-पद्धति, आयरन तथा गैर-आयरन कारण, मध्यम और गंभीर मामलों की पहचान जोड़ें।
- **निष्कर्ष में:** लक्षित उपचार और उपचार पूरा होने तक निगरानी का महत्व बताएँ।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

क्या सभी आयु-समूहों का एक प्रतिशत है? नहीं। सर्वेक्षण के अनुमान आयु और लिंग के अनुसार अलग हैं।

क्या 42% सभी बच्चों का आँकड़ा है? नहीं। यहाँ यह 12–59 माह के बच्चों का प्रकाशित अनुमान है।

क्या नई संख्या से पुराने सर्वेक्षण का प्रतिशत सीधे घटा सकते हैं? बिना पद्धति और आयु-दायरे मिलाए उसे निश्चित बदलाव बताना उचित नहीं।

स्रोत: 1. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2340476 2. https://www.nin.res.in/ebooks/Sampada_Anaemia_BM_Factsheet.pdf

---